पुरुष

(The theory of purusa)

Most Important

Q. (24) पुरुष संबंधी विचार क्या है? सांख्य आत्मा (जीव) की अनेकता कैसे सिद्ध करता है?

अथवा

सांख्य दर्शन के अनुसार पुरुष के स्वरूप की व्याख्या करें। क्या यह (पुरुष) एक है या अनेक?

उत्तर :—

सांख्य दर्शन दो तत्वों को स्वीकार करता है: प्रकृति और पुरुष। पुरुष का अध्ययन करने के लिए प्रकृति और पुरुष भिन्नता की ओर ध्यान देना आवश्यक है। पुरुष चेतन है, प्रकृति

अचेतन है। पुरुष गुणों से शून्य है जबकि प्रकृति तीन गुणों से अलंकृत है। पुरुष ज्ञाता है जबकि प्रकृति ज्ञान का विषय है। पुरुष ~~निष्क्रिय~~ निष्क्रिय है जबकि प्रकृति सक्रिय है। पुरुष अनेक है जबकि प्रकृति एक है। पुरुष कार्य-कारण से मुक्त है जबकि प्रकृति कारण है। पुरुष अपरिवर्तनशील है जबकि प्रकृति परिवर्तनशील है। पुरुष विवेकी है परन्तु प्रकृति अविवेकी है। जिस सत्ता को अधिकांशत: भारतीय दार्शनिकों ने आत्मा कहा है उसी सत्ता को सांख्य ने पुरुष की संज्ञा से विभूषित किया है। पुरुष और ~~प्रकृति~~ आत्मा इस प्रकार एक ही तत्व के विभिन्न नाम हैं। पुरुष की सत्ता स्वयं सिद्ध है। इसकी सत्ता का खण्डन करना असंभव है। उसका अस्तित्व संशय रहित है। सांख्य में पुरुष को शुद्ध चैतन्य माना है। चैतन्य आत्मा का स्वभाव है। आत्मा प्रकाश रूप है, जो स्वयं तथा संसार के अन्य वस्तुओं को प्रकाशित करती है। आत्मा, शरीर से भिन्न है। शरीर भौतिक है परन्तु आत्मा अभौतिक

है। आत्मा बुद्धि और अंहकार से भिन्न है। क्योंकि इन्द्रियाँ अनुभव के साधन है जबकि पुरुष अनुभव से परे है। पुरुष अकर्ता (निष्क्रिय) है। वह संसार के कार्यों में भाग नहीं लेता है। जैन दर्शन ने जीवों को कर्ता माना है। पर सांख्य का पुरुष ~~ने जीवों को कर्ता माना है~~ निष्क्रिय और उदय है। वह ज्ञाता है ज्ञान का विषय कभी नहीं हो सकती है। शरीर का जन्म और मृत्यु होती है पर आत्मा अनादि और अनन्त है पुरुष न तो किसी वस्तु का कारण है। और न उसका कार्य है। पुरुष काल और दिक की सीमा से बाहर है। वह सुख और दुख से रहित है। वह राग और द्वेष से मुक्त है। वह पाप पुण्य से रहित है। न्याय और वैशेषिक ने आत्मा को स्वभावतः अचेतन कहा है उनके अनुसार आत्मा में चेतना का संचार तब होता जब आत्मा का संपर्क मन, शरीर और इन्द्रियों से होता है। वे चैतन्य को आत्मा का आगन्तुक लक्षण मानते हैं परन्तु सांख्य को आत्मा का स्वरूप मानता है। सांख्य शंकर के आत्मा संबंधी विचार से भी सहमत नहीं है। शंकर ने आत्मा को

सत् + चित + आनन्द, सच्चिदानन्द माना है पर सांख्य आत्मा को आनन्द नहीं मानता है। आनन्द और चैतन्य विरोधात्मक गुण है। आनन्द सत्व का फल है। पर सांख्य का पुरुष सात्व गुण से शून्य है। इसलिए आत्मा आनन्द स्वरूप नहीं है। शंकर ने आत्मा को एक माना है। जबकि सांख्य ने आत्मा को अनेक माना है। सांख्य का पुरुष विचार, बुद्ध के आत्मा विचार से भिन्न है। बुद्ध ने आत्मा को विज्ञान का प्रवाह माना है। परन्तु इसके विपरीत सांख्य ने आत्मा को परिवर्तनशील नहीं मानकर आत्मा की नित्यता पर जोर दिया है। सांख्य के आत्मा और चार्वाक के आत्मा में मूल भेद यह है कि सांख्य आत्मा को अभौतिक मानता है। जबकि चार्वाक आत्मा को भौतिक मानता है।